भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-13, अंक-1 गुरुवार, 25 जन.' 90	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

'विजयदिन.....3, फरवरी'

'असल में परमेश्वर का साक्षात्कार करके आदेश प्राप्त किये हुए पुरुष ही यथार्थ में धर्म-प्रचार के योग्य होते हैं, दूसरे लोग तो अपनी-अपनी डफली बजाने वाले केवल नाममात्र के प्रचारक होते हैं।'

श्री रामकृष्ण परमहंसदेव

प.पू. काकाजी महाराज से हम सबने कई बार सुना था—**'मैं साक्षात्कारवाला पुरुष हूँ।'** और उसके बाद तुरन्त ही पल्टी मारकर वह यह भी कहते कि देखो, मैं मेरे अहम् की—अभिमान की बात कर रहा हूं न? और हमारी जड़बुद्धि भी उन्हें अपनी मायिक दृष्टि से नापने लग जाती पर, ऊपरी लिखित परमहंसदेव के कथन के मूल्यांकन से स्पष्ट होता है कि डंके की चोट पर यह बात कहकर वे हमें उनके अधिकार का परिचय करा रहे थे—समझाना चाहते थे कि तुम कैसे समर्थ सारथी की गोद में बैठे हो? मेरे रूप में तुम्हें क्या प्राप्ति हुई है....वह तुम जितनी जल्दी समझ लो इतनी जल्दी निरंतर अक्षरधाम की—सहजानंदी भूमिका में स्थित हो जाओगे।

वह धन्य दिन नजदीक आ रहा है.....'3 फरवरी' अर्थात् गुणातीत समाज का ऐतिहासिक व स्वर्णाक्षरों से लिखा जाने वाला महामंगलकारी दिन.... प्र.ब्र.स्व.प.पू. पप्पाजी की वाणी में—3 फरवरी अर्थात् 'विजयदिन'....क्योंकि इस दिन सात जड़कोटी से पर होकर अक्षरधाम की समाधि में रहने वाले एक नूतन गुणातीत समाज की नींव रखी गई ! प.पू. काकाजी के ब्रह्मनाद ने एक अनोखा बिगुल बजाकर प्रत्यक्ष स्वरूप की पहचान दी व उनके अभिप्राय की भक्ति में ही जीवन की सार्थकता समझाई।

गुरुवर्य योगीजी महाराज ने इस महामंगलकारी दिन अपने लाडले व शूरवीर पुत्र प.पू. काकाजी को 72 घंटे की समाधि करवाई, जहाँ उन्हें धरती पर प्रकट योगीजी महाराज व अक्षरधाम में विराजमान भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति के अपृथक्भाव का दिव्य दर्शन हुआ। प.पू. काकाजी को जो यह स्वरूपानुभूति हुई वह उन्होंने स्वयं के जीवन की हरेक पल में बसाकर जो भी उनके संबंध में आये

उन हरेक को उस दिव्यता का पान कराया.....अरे ! दिव्य जीवन बक्षिश दे दिया !!

कैसे भूलेंगे उस अनोखे व अति उदार चैतन्य शिल्पी को? जिस-जिसने भी अखंड प्रभु की मस्ती में ही रहती उस अलमस्त मूर्ति का दर्शन एक बार भी किया है वह कभी भी उन्हें भुला नहीं पायेगा। इटली के Dr Radislav ने अपने Greetings में लिखा है–

'Our dear Kakaji Maharaj is always in our hearts & minds. We could not forget the time passed in His company & the experiences had. He was, nay, is unique!'

सच है, प.पू. काकाजी की सौम्य मूर्ति हरेक चैतन्य के विकास के लिए किया गया उनका अनहद् परिश्रम, मीठी परन्तु सचोट डॉट व उनके कहे शब्द आज भी कानों में गूंजते रहते हैं और हमें सतर्क कर देते हैं–

- o तुम्हारा जीव ब्रह्मरूप हुआ?
- o तुम प्रभु की मूर्ति में रहते हुए?
- o तुम्हारा स्त्री-पुरुष भाव गया?
- o आप कौन हो? आप किसके हो? अपने मन के, मान्यता के, सत्य के?
- o मन का आभास भी हमें नहीं रहने देना है।
- o तुम पांच साधु एक हुए?
- o मन का राज्य छोड़ दो, गुरुराज्य में प्रवेश कर जाओ....
- o दुनिया माने या ना माने, तुम तो मानो....
- o आज तक का सब माफ, अब नया प्रारब्ध मत खड़ा करना।
- o अनुभव करने के बाद तो Unconditional Surrender करो....

उनकी बलभरी परावाणी अल्प ही संबंध में आये हरेक व्यक्ति के अंतःकरण में आज भी एक 'दिव्य लौ'–ज्योति बनकर बाहरी व आन्तरिक अंधकार में से बाहर लाकर सचेतन सक्रिय समतापूर्वक के साक्षीभाव में स्थिर कर देती है.....करोड़ों वंदन उस सुहृद सम्राट को.....

प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के मुख से कई बार हमने सुना है ''शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज अगर प्रगट न हुए होते तो अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन शुद्ध युगल उपासना का किसी को ख्याल भी नहीं आ सकता था। उसी प्रकार प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व पू. कान्तिकाका की त्रिपुटी ने खुद संकल्प करके–अथक् परिश्रम करके ताड़देव की धरती पर यदि आत्मीयता व सुहृद्भाव का दर्शन न कराया होता तो योगीबापा का परिश्रम विफल हो जाता।'' शायद कोई व्यक्ति खुद आत्मीय हो सकता है, पर स्वयं का अस्तित्व याहोम करके जिस व्यक्ति ने सारा समाज तैयार किया–वह है प.पू. काकाजी !

प.पू. काकाजी का जीवन केवल भक्तों के लिए ही था। जपयज्ञ का वह मूर्तस्वरूप थे। आज भी उनकी धून्य का ब्रह्मनाद हर पल कानों में गूंजकर दिल व दिमाग दोनों को परम शान्ति का अनुभव कराता है। जो भी कोई उनके पास आता हृदय में अनोखी निश्चिन्तता का हाश प्राप्त करके ही लौटता। हरेक के दुःख–व्यवहारिक या आन्तरिक व आध्यात्मिक उलझनों को खुद के माथे पर लेकर, इससे भी अधिक अपनी ही समस्या मानकर–परिश्रम लेकर–धून्य, भजन, यज्ञ, महापूजा करके दूर करते....इससे भी अधिक उनकी निंदा-उपेक्षा करने वाले हरिभक्तों–मुक्तों के जीवन की समस्याओं में भी सामने से रस लेते, कठिनाइयां

उठाते.....! इसे हम किस कक्षा की आत्मीयता कहेंगे? हमारी मायिक बुद्धि क्या इसकी कभी कल्पना भी कर पायेगी?....आत्मा मे से बस यही शब्दों का उद्‌गार निकलता है....'धन्यवाद-धन्यवाद-धन्यवाद....आपने हमें ग्रहण किया,.....अपनी गोद में बिठाकर धन्य कर दिया.....।' कैसे ऋण चुका पायेंगे उस दिव्य विभूति का?.....

और...समस्त संकुचित दायरों, धारणाओं से ऊपर उठकर प.पू. काकाजी की वाणी को हम याद करें तो हमें ख्याल पड़ेगा कि उस आर्षदृष्टा पुरुष का दृष्टिकोण कैसा विशाल था।

'आप किसी भी देव को मानो.....माताजी को या महादेव को, राम को या कृष्ण को, घंटाकर्ण देव को या हनुमान को, किसी भी देवी या देवता को– पर उस पर श्रद्धा व विश्वास से पक्की निष्ठा तो रखिये। अपने जीवन में प्रभु की First preferene रखिये। धन, पुत्र, स्त्री, सत्ता का आपके जीवन में जितना महत्व है उतना आप प्रभु का नहीं रखते; जबकि अगर आप प्रभु का स्थान प्रथम रखोगे तो वह आप को हर प्रकार से सुखी करने वाले हैं। दुःख इस बात का है कि आपके जीवन में परमात्मा का स्थान आता भी है, तो वह चौथा-पांचवाँ....'

''माहात्म्यज्ञान सहित भक्ति–इसमें ही सब कुछ आ गया, तो दो सच्चे भगवदी के साथ एकता रखते हुए भजन करते रहना। बाकी सब कुछ योगी बापा कर लेंगे।''

''कोई भी छोटी बड़ी क्रिया करो, भगवान के नाम का नमक डालकर करो। सिर्फ दो ही मिनट स्मृति करके करो, तो महादुःखदायी माया आपको बन्धनकारी नहीं होगी।''

कितने आसान व सचोट उपाय वह बताते ही रहे.....बताते ही रहे.....पर हम..... !!!

प.पू. काकाजी जैसे आर्षदृष्टा पुरुष का शरीर छोड़ना भी महामंगलकारी ही ! एक बात जो निश्चित है कि स्थूलरूप से हमारे बीच से छलांग मारने के पीछे भी उनकी एक यही चाहना थी–'एक चोट देकर हमारी आध्यात्मिक प्रगति की रफ्तार बढ़ानी।' पहले तो उन्हें देह का बन्धन था–'आज प.पू. काकाजी बम्बई में हैं, आज अमेरिका गये हैं...'। परन्तु, अब तो प.पू. काकाजी पहले से अधिक हरके पल, हरेक क्षण, हरेक जगह प्रगट ही हैं। केवल हमारे पुकारने मात्र की ही देर है। उनकी इतनी बड़ी आहुति को समझकर अब भी हम जीना शुरु कर देंगे तो वे इसे भी हमारी भक्ति मानकर हमें धन्य कर देंगे। प.पू. काकाजी कई बार कहते थे कि **मैं तो आशीर्वाद बरसाता हूं, पर तुम सब छाता लेकर खड़े हो जाते हो।** प.पू. काकाजी की ऐसी बातों को जैसे-जैसे समझते जायेंगे और अधिक उनकी महिमा समझ में आती जायेगी व उतना अधिक हमारे हृदय से आवाज आयेगी कि 'अहोहो ! प.पू. काकाजी ऐसे थे !!'

तो इस पवित्र दिन पर पिछला सब कुछ भूलकर Unconditional Surrender करके प.पू. काकाजी को जो पसंद था वह करने जायें तो जैसे वे हर सैकण्ड हमें सहायभूत होकर बाहरी व आन्तरिक मुश्किलों से हमारी रक्षा करते थे, वैसे अब भी करते रहेंगे। हमें तो बस प.पू. काकाजी के शब्दों में 'भुलका'–बालक बनकर 'मम्मी-मम्मी' पुकारना है। अरे ! केवल झूठ-मूठ भी रोयेंगे तो भी मां इतनी दयालु है कि वह दौड़कर आ जायेगी। तो अब जीने का पुराना ढांचा हम बदलें वही सच्ची प्रीति है व वही हमने उस 'दिव्य मां' का सच्चा साक्षात्कार दिन मनाया–!

o o o

ब्रह्मप्रवाह

परम साक्षात्कार—3 फरवरी का दिव्य संदेश

—सभी श्रेयार्थी साधक वर्ग को—साधना की पूर्णाहुति काः

1. सार्वभौम सर्वोपरि परब्रह्मसत्ता ही सर्वत्र—आगे-पीछे सभी स्थानों पर—समय से परे—पल-पल ही तुम्हारे हृदय में अखंड विराजमान रहकर केवल वह ही सब कार्य कर रही है—व जो कुछ बन रहा है व बनता जायेगा वह **तुम्हारे परमहित** में ही होगा। यूं दृढ़ मानकर—स्वीकर करके **अखंड जाग्रत** व अखंड सतर्क खुल्ले ही रहो व उन्हें ही सम्पूर्ण सहकार दो ऐसा बल-प्रेरणा व सुरुचि सहज ही प्रगट होवे यही अंतर की तीव्र अभिप्सा के साथ प्रभुचरण में प्रार्थना है। तो इतना ही अखंड स्मरण करते रहने की **आदत-अभ्यास**—नियमित रूप से डालते रहो। तो जीवन में पल-पल सुख-शान्ति-बल-प्रकाश व आनंद सहज ही मिलता जायेगा। ऐसा चैतन्यप्रवाह अखंड ही बहता रहता है, तो सर्जनात्मक उध्धारक परमसत्य को ही निर्दोषभाव से total स्वीकार कर सर्व आरंभ करते रहो।
2. दो अच्छे भगवदी के साथ दृढ़ मैत्रीभाव संजोओ। उसके लिए प्रायश्चितरूप निर्मानीभाव से प्रार्थना करना।
3. तुम्हारी सब क्रियायोगों का फल—'ज्ञान अग्नि' में ही होम करके अर्पण करोगे तो अखंड सर्वोपरि ब्रह्मसत्ता का साक्षात्कार ज्ञानसमाधि के रूप में तुम अनुभव करोगे व अक्षरधाम का ही दिव्यसुख पाकर—भोगकर अन्य को भी 'हम सब एक' के सिद्धान्त से बांटना ! तो गुणातीतभाव को अब व्यापक बनाते रहना व अविचल अंतिम विश्राम स्थान में 'परमपद' की प्रतीति तुम स्वयं प्रथम सिद्ध करके सभी के लिए एकांतिक धर्म सरलता से सिद्ध हो वैसी सेवा कर लेना। प्रभु सबको ऐसा बल व दृष्टि देवें यह अभ्यर्थना के साथ—

आनंद करो व सबको कराओ।

लि. आपके ही **दादुकाका** के हेतपूर्वक **जयश्री** स्वामिनारायण

3.2.'82

व्रतोत्सवसूची

1. दि. 31.1.90	बुधवार	वसंत पंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन
2. दि. 3.2.90	शनिवार	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
3. दि. 4.2.90	रविवार	नवमी
4. दि. 6.2.90	मंगलवार	एकादशी, व्रत
5. दि. 19.2.90	सोमवार	नवमी
6. दि. 21.2.90	बुधवार	विजया एकादशी, व्रत
7. दि. 23.2.90	शुक्रवार	महाशिवरात्रि व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Delhi-110 052. (India) Tel. : 7119525, 7229327, 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032